प्रेरितों के काम
रूपान्तरण
डॉ. डेरिक थॉमस
30 जनवरी, 2011

रूपान्तरण
परमेश्वर का धीरज, परमेश्वर की सामर्थ, और पौलुस का जोश
प्रेरितों के काम 9:1–31

क्या आप "अमेजिंग ग्रेस" गीत को पसन्द नहीं करते है? आप उस व्यक्ति पर से पाप की जंजीरों के टूटने की आवाज को सुन सकते हैं जिसने इसे लिखा है। जॉन न्यूटन ने इस गीत को लिखा है। उनका जन्म 17वीं सदी में लन्दन में हुआ था। वह एक ऐसा व्यक्ति था जो बाद में एक पासबान और लोगों का प्रेमी बना, परन्तु उससे पहले, उसके अपने अंगीकार के अनुसार, वह एक दुष्ट व्यक्ति था। क्रोध, क्रूरता, रोष और पाप उसके हृदय एवं जीवन की विशेषताएँ थी। वास्तव में, एक समय, वह गुलामों के जहाज का मालिक और कप्तान था। अपने दिल में भरे हुए क्रोध के कारण वह उन लोगों को गाली देता और उनसे दुर्व्यवहार करता था जो जानवरों की तरह उसकी सेवा करते थे।

परन्तु, परमेश्वर ने उस पर करूणा की और अनुग्रह दिखाया। परमेश्वर ने जॉन न्यूटन को बदल दिया, और उसे लोगों से प्रेम करने वाला बना दिया। वह न केवल एक पासबान और भजनों का लेखक था, परन्तु उसने यूरोप में अफ्रीकी गुलामों के व्यापार की समाप्ति में भी विलियम विल्बरफोर्स जैसे पुरूषों के साथ मिलकर भाग लिया था। परमेश्वर हमेशा से लोगों के जीवनों को रूपान्तरित करता रहा है। आज, हम शाऊल नामक एक व्यक्ति के बारे में देखने जा रहे हैं।

यदि आप देखना चाहते हैं तो निकालें प्रेरितों के काम 9. यहाँ पर हम शाऊल नामक इस व्यक्ति के बारे में पढ़ते हैं, जिसका यूनानी नाम पौलुस था। इस प्रचार के दौरान मैं उन नामों का समानार्थी के रूप में प्रयोग करूँगा। यह एक ही व्यक्ति है। इब्रानी लोग उसे सामान्यतः शाऊल कहते थे, और पौलुस उसका यूनानी नाम था। यूनानी उसे सामान्यतः इसी नाम से बुलाते होंगे।

मैं प्रेरितों के काम 9 में से 1 से लेकर 31 तक के पदों को एक साथ पढ़ना चाहता हूँ। जब हम पढ़ते हैं, तो मैं चाहता हूँ कि आप तीन बातों को देखें: परमेश्वर का धीरज, परमेश्वर की सामर्थ, और पौलुस का जोश। हमारे लिए एक ऐसी संस्कृति में रहना कितने सौभाग्य की बात है जहाँ हम में से अधिकाँश लोग शिक्षित हैं, और हम पढ़ सकते हैं। न केवल इतना, परन्तु हमारे पास हमारे परमेश्वर के वचन हमारी अपनी भाषा में हैं, जिन्हें स्वयं वैद्य लूका ने लिखा है, पहली सदी का वैद्य लूका, जिसने पवित्र आत्मा की प्रेरणा से लिखा, वह पद 1 में कहता है,

> *और शाऊल जो अब तक प्रभु के चेलों को धमकाने और घात करने की धुन में था, महायाजक के पास गया। और उस से दमिश्क के आराधनालयों के नाम पर इस अभिप्राय की चिट्ठियाँ माँगी, कि क्या पुरूष, क्या स्त्री, जिन्हें वह इस पंथ पर पाए उन्हें बाँधकर यरूशलेम में ले आए। परन्तु चलते चलते जब वह दमिश्क के निकट पहुँचा, तो एकाएक आकाश से उसके चारों ओर ज्योति चमकी। और वह भूमि पर गिर पड़ा, और यह शब्द सुना, कि हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है? उस ने पूछा: हे प्रभु, तू कौन है?*

उस ने कहा; मैं यीशु हूँ; जिसे तू सताता है। परन्तु अब उठकर नगर में जा, और जो कुछ करना है, वह तुझ से कहा जाएगा। जो मनुष्य उसके साथ थे, वे चुपचाप रह गए; क्योंकि शब्द तो सुनते थे, परन्तु किसी को देखते न थे। तब शाऊल भूमि पर से उठा, परन्तु जब आँखे खोली तो उसे कुछ दिखाई न दिया और वे उसका हाथ पकड़कर दमिश्क में ले गए। और वह तीन दिन तक न देख सका, और न खाया और न पीया।

पद 10,

दमिश्क में हनन्याह नाम एक चेला था, उस से प्रभु ने दर्शन में कहा, हे हनन्याह! उस ने कहा; हाँ प्रभु। तब प्रभु ने उस से कहा, उठकर उस गली में जा जो सीधी कहलाती है, और यहूदा के घर में शाऊल नाम एक तारसी को पूछ ले; क्योंकि देख, वह प्रार्थना कर रहा है। और उस ने हनन्याह नाम एक पुरूष को भीतर आते, और अपने ऊपर हाथ रखते देखा है; ताकि फिर से दृष्टि पाए। हनन्याह ने उत्तर दिया, कि हे प्रभु, मैं ने इस मनुष्य के विषय में बहुतों से सुना है, कि इस ने यरूशलेम में तेरे पवित्र लोगों के साथ बड़ी बड़ी बुराईयाँ की हैं। और यहाँ भी इस को महायाजकों की ओर से अधिकार मिला है, कि जो लोग तेरा नाम लेते हैं, उन सब को बाँध ले। परन्तु प्रभु ने उस से कहा, कि तू चला जा; क्योंकि यह, तो अन्यजातियों और राजाओं, और इस्राएलियों के सामने मेरा नाम प्रकट करने के लिये मेरा चुना हुआ पात्र है। और मैं उसे बताऊँगा, कि मेरे नाम के लिए उसे कैसा कैसा दुख उठाना पड़ेगा।

तब हनन्याह उठकर उस घर में गया, और उस पर अपना हाथ रखकर कहा, हे भाई शाऊल, प्रभु, अर्थात् यीशु, जो उस रास्ते में, जिस से तू आया तुझे दिखाई दिया था, उसी ने मुझे भेजा है, कि तू फिर दृष्टि पाए और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए। और तुरन्त उस की आँखों से छिलके से गिरे, और वह देखने लगा और उठकर बपतिस्मा लिया; फिर भोजन करके बल पाया। और वह कई दिन उन चेलों के साथ रहा जो दमिश्क में थे। और वह तुरन्त आराधनालयों में यीशु का प्रचार करने लगा, कि वह परमेश्वर का पुत्र है। और सब सुनने वाले चकित होकर कहने लगे; क्या यह वही व्यक्ति नहीं है जो यरूशलेम में उन्हें जो इस नाम को लेते थे नाश करता था, और यहाँ भी इसीलिए आया था, कि उन्हें बाँधकर महायाजकों के पास ले आए? परन्तु शाऊल और भी सामर्थी होता गया, और इस बात का प्रमाण दे देकर कि मसीह यही है, दमिश्क के रहने वाले यहूदियों का मुँह बन्द करता रहा।

जब बहुत दिन बीत गए, तो यहूदियों ने मिलकर उसको मार डालने की युक्ति निकाली। परन्तु उन की युक्ति शाऊल को मालूम को गईः वे तो उसे मार डालने के लिये रात दिन फाटकों पर लगे रहे थे। परन्तु रात को उसके चेलों ने उसे लेकर टोकरे में बैठाया, और शहरपनाह पर से लटकाकर उतार दिया। यरूशलेम में पहुँचकर उस ने चेलों के साथ मिल जाने का प्रयत्न कियाः परन्तु सब उस से डरते थे, क्योंकि उन को विश्वास न होता था, कि वह भी चेला है। परन्तु बरनबास ने उसे अपने साथ प्रेरितों के पास ले जाकर उन से कहा, कि इसने किस रीति से मार्ग में प्रभु को देखा, और उसने इससे बातें कीं; फिर दमिश्क में इस ने कैसे हियाव से यीशु के नाम का प्रचार किया। वह उन के साथ यरूशलेम में आता जाता रहा। और निधड़क होकर प्रभु के नाम से प्रचार करता थाः और यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदियों के साथ बातचीत और वाद–विवाद करता था; परन्तु वे उसे मार डालने का यत्न करने लगे। यह जानकर भाई उसे कैसरिया ले आए, और तरसुस को भेज दिया।

पद 31, *"सो सारे यहूदिया, और गलील, और सामरिया में कलीसिया को चैन मिला, और उसकी उन्नति होती गई; और वह प्रभु के भय और पवित्र आत्मा की शान्ति में चलती और बढ़ती गई।"*

मुझे यहाँ हमारे शहर के मुसलमान लोग पसन्द हैं, और मैं उनके लिए प्रार्थना करता हूँ, जैसे कि आप में से बहुत से लोग करते हैं, मुझे पता है। कुछ महीने पहले मैं हमारे शहर की एक मस्जिद में गया। मस्जिद में मैं ने लगभग 300 लोगों को शुक्रवार दोपहर बाद 1:00 बजे देखा, जो संभवतः कार्यस्थल पर उनके भोजन के अवकाश का समय था। ज्यादा नहीं तो, लगभग उतनी ही महिलाएँ भी थी। मैं उन्हें देख नहीं सका क्योंकि कमरे में पुरूषों और स्त्रियों के बैठने का स्थान विभाजित किया हुआ था।

वहाँ विविध प्रकार के लोगों का एक समूह था। पुरूष जो मध्य–पूर्व से आए थे; कोकेशिया के पुरूष, अफ्रीकी–अमरीकी पुरूष, और दूसरी बहुत सी जातियों के पुरूष वहाँ थे। उनके पहनावे को देखकर आप बता सकते थे कि उनमें व्यवसायी और चिकित्सकीय पेशेवर लोग और ऐसे पुरूष भी थे जो स्पष्टता से सड़क पार से आए थे, सब लोग प्रार्थना करने और सन्देश को सुनने के लिए एक साथ एकत्रित थे।

उस दिन का सन्देश कुछ इस प्रकार से था। यह उन लोगों को सुनाया गया था जो बहुत ध्यान से सुन रहे थे।

> आपको अल्लाह को अपने जीवन में पहला स्थान देना चाहिए। अल्लाह उन सबके योग्य है जो कुछ आपके पास है और आप जो कुछ हैं। और आप में से बहुत से लोग भौतिकता और अपने परिवारों में फँसे हुए हैं। मुसलमान सातवीं और आठवीं सदी में स्पेन में गए और उस पर अधिकार कर लिया। 16वीं और 17वीं सदियों में मुसलमान इण्डोनेशिया में गए और उस पर अधिकार कर लिया, और अब वह संसार का सबसे अधिक मुसलमान आबादी वाला देश है। यह ऐसा न होने का कारण है कि आप लोग अपनी भौतिक संपत्तियों को अल्लाह से प्रमुख स्थान दे रहे हो, और अपने बच्चों को अल्लाह से प्रमुख स्थान दे रहे हो, और अल्लाह आपकी पूर्ण भक्ति के योग्य है। यदि आपके पास कोई व्यवसाय है, तो आपके केवल मुसलमानों को ही नौकरी पर रखना चाहिए। जब आप एक घर खरीदते हैं, तो मुसलमानों के पड़ोस में खरीदें। अल्लाह को सब कुछ दे दें।

वह बहुत ही रूचिकर सन्देश था। हमारे अपने शहर में। हम इसके बारे में बहुत कुछ कह सकते हैं, परन्तु आज मैं आपके ध्यान को इस सवाल की ओर खींचना चाहता हूँ। क्या आप सोचते हैं कि परमेश्वर इस व्यक्ति जैसे एक धार्मिक शिक्षक, जोशीले व्यक्ति को बचा सकता है और बदलकर रूपान्तरित कर सकता है? क्या आप सोचते हैं कि परमेश्वर उसे बचाकर एक मिशनरी बना सकता है, या सुसमाचार से वंचित समूहों के बीच एक कलीसिया की स्थापना करने वाला बना सकता है? क्या आप सोचते हैं कि परमेश्वर ऐसा कर सकता है? आशा है, जब हम प्रेरितों के काम 9 का अध्ययन करते हैं तो आप सीखेंगे और उत्तरों को अधिक स्पष्टता से देखेंगे।

मेरे साथ पद 1 को देखें, और जब आप इस पद को पढ़ते हैं, मैं चाहता हूँ कि आप इस वचन को 1 तिमुथियुस (1:15–16) के चश्मे से देखें। यह एक परिच्छेद है जिसे पौलुस ने बाद में विश्वास में आने पर तिमुथियुस को लिखा था, जहाँ वह कहता है, *"यह बात सच और हर प्रकार से मानने के योग्य है कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिए जगत में आया, जिनमें सब से बड़ा मैं हूँ। पर मुझ पर इसलिए दया हुई कि मुझ सब से बड़े पापी में यीशु मसीह अपनी पूरी सहनशीलता दिखाए, कि जो लोग उस पर अनन्त जीवन के लिए विश्वास करेंगे उनके लिए मैं एक आदर्श बनूँ।"*

परमेश्वर का धीरज

"प्रेम धीरजवन्त है," (1 कुरिन्थियों 13:4) और *"परमेश्वर प्रेम है,"* (1 यूहन्ना 4:8) परन्तु इस वचन में भी, मैं चाहता हूँ कि आप परमेश्वर के धीरज को देखें। पद 1 को देखें। लिखा है, *"और शाऊल,"* आओ हम यहाँ रूकते हैं। शाऊल एक ऐसा व्यक्ति था जो पहली सदी के अधिकाँश यहूदियों से अलग, यरूशलेम में नहीं जन्मा था। शाऊल तरसुस में जन्मा था। तरसुस इस्राएल के ठीक ऊपर एक शहर था, जहाँ आज का तुर्की होगा। वह यहूदी माता–पिता के प्रेमी परिवार में जन्मा था। उसके पिता एक फरीसी थे। उसके पिता केवल एक यहूदी और एक फरीसी ही नहीं परन्तु एक रोमी नागरिक भी थे, जिसका मतलब है कि जब पौलुस का जन्म हुआ था, तो वह एक रोमी नागरिक के रूप में जन्मा था।

एक युवक के रूप में वह बड़ा हुआ और उसके माता–पिता ने उसे पढ़ने के लिए यरूशलेम में एक फरीसी गुरू के पास भेज दिया, जिसका नाम गमलीएल था। पहली सदी में किसी भी युवा को प्राप्त हो सकने वाली सबसे अच्छी शिक्षा पौलुस को प्राप्त हुई थी। वास्तव में, वह सुशिक्षित था। पौलुस पुराने नियम को अच्छी तरह से जानता होगा। वास्तव में, उसके काफी भाग को उसने याद कर लिया होगा। वह इब्रानी और यूनानी और अरामी, और संभवतः लैटिन भी अच्छी तरह से जानता होगा। वह स्वयं कहता है कि वह जोश और उत्साह से भरा था। वह ज्ञान और ताकत में अपने साथियों से आगे बढ़ गया, और ओहदे में ऊपर की ओर बढ़ रहा था। पुरनियों की परम्पराओं और यहूदी विश्वास की उसके हृदय में गहरी पैठ थी।

"और शाऊल जो अब तक प्रभु के चेलों को धमकाने और घात करने की धुन में था।" अब तक धमका रहा था। उस समय से करता आ रहा है जब हम पहली बार प्रेरितों के काम 7 और 8 में उससे मिले थे। क्या आप को याद है? वह उन पुरूषों में से एक था, और उनके वस्त्रों की रखवाली कर रहा था जो पत्थर उठाकर स्तिफनुस नामक एक व्यक्ति को तब तक पत्थरवाह करते रहे जब तक कि वह मर नहीं गया। वह किस प्रकार का व्यक्ति होगा जो वहाँ खड़ा शत्रुतापूर्ण, क्रोधित, गाली–गलौच करने वाले और क्रूर पुरूषों के एक समूह के वस्त्रों की रखवाली कर रहा था और उनसे पूरी तरह सहमत था जब वे स्तिफनुस नामक इस व्यक्ति को मार रहे थे, जिसके बारे में बाइबल कहती है, *"उसका मुँह स्वर्गदूत की नाईं चमक रहा था"*? वह अनुग्रह और पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण था, फिर भी उन्होंने उसे मार दिया।

निश्चित रूप से, स्तिफनुस के ही शब्दों में, वह ऐसे पुरूषों का झुण्ड था जो हठीले और घमण्डी थे और हमेशा पवित्र आत्मा का विरोध करते थे। पौलुस एक ऐसा व्यक्ति था। हम यहाँ प्रेरितों के काम 9 में दोबारा उससे मिलते हैं, और लिखा है कि वह अब तक "उसी धुन में था।" क्रोधित व्यक्ति यही करते हैं, धमकी देना, और हत्या करना।

"शाऊल महायाजक के पास गया और उस से दमिश्क के आराधनालयों के नाम पर इस अभिप्राय की चिट्ठियाँ माँगी, कि क्या पुरूष, क्या स्त्री, जिन्हें वह इस पंथ पर पाए उन्हें बाँधकर यरूशलेम में ले आए।" पौलुस ने पहले ही यरूशलेम में मसीहियों को मृत्यु तक सताया था, परन्तु उसके लिए वह पर्याप्त नहीं था। वह बहुत अधिक जोश और उत्साह से भरा था और उसे पूरा निश्चय था कि ये मसीही लोग गलत थे क्योंकि, "एक ऐसा व्यक्ति मसीह और ख्रिस्त कैसे हो सकता था जिसे काठ पर लटका दिया गया था और जो परमेश्वर की ओर से शापित था?" हम उन्हें मार देंगे और इसे हमेशा के लिए कुचल देंगे, और इसे हम केवल यरूशलेम में ही नहीं करेंगे; मैं दमिश्क में जा रहा हूँ।"

और वह महायाजक के पास गया जो उस समय शायद कैफा होगा, और कैफा महासभा के ऊपर होगा। महासभा में 71 पुरूष थे जो यहूदियों का नेतृत्व करते थे। उसने दमिश्क में जाने के लिए कागजी कार्यवाही

की होगी। दमिश्क यरूशलेम के उत्तर–पूर्व में लगभग 135 मील की दूरी पर स्थित एक नगर था। इस 135 मील की यात्रा को पैदल, या ऊँट या घोड़े के द्वारा किया गया होगा।

अतः, यह एक गम्भीर आदमी है। छह दिन वहाँ पहुँचने की प्रतीक्षा करता है। मसीहियों को बाँधने की प्रतीक्षा में है। उन्हें यरूशलेम में लाने और यहाँ तक कि उनमें से कुछ लोगों को मार देने की प्रतीक्षा में है। वह पुरूषों और स्त्रियों पर कोई दया नहीं करेगा। आओ हम पद 3 पर चलते हैं और देखते हैं कि क्या होता है। *"परन्तु चलते चलते जब वह दमिश्क के निकट पहुँचा, तो एकाएक आकाश से उसके चारों ओर ज्योति चमकी।"* क्या आप इसे देख सकते हैं? पौलुस, एक पापी और क्रोधित व्यक्ति दमिश्क के मार्ग पर है, वह न केवल दमिश्क बल्कि नरक की ओर जा रहा था, परन्तु परमेश्वर ने उसे बचा लिया।

पापियों के प्रति परमेश्वर के धीरज को देखें।

क्या आप पौलुस के प्रति परमेश्वर के धीरज को देख रहे हैं? क्या आप पापियों के प्रति परमेश्वर के धीरज को देख रहे हैं? क्या आप देख रहे हैं कि परमेश्वर नरक की ओर जा रहे इस व्यक्ति को बचाकर उसे इस मार्ग का हिस्सा बनाते हैं, जब वह, 2 कुरिन्थियों 4:6 में पौलुस के स्वयं के शब्दों में, यीशु मसीह के चेहरे की महिमा की अपनी ज्योति को पौलुस नामक इस व्यक्ति पर चमकाते हैं? पौलुस यहाँ पर्याप्त रूप से नम्र हो जाता है।

यह घटना लगभग दोपहर के समय घटी होगी। प्रेरितों के काम 22 से हमें यह पता चलता है। प्रेरितों के काम 26 से हमें यह भी पता चलता है कि उस पर चमकने वाली ज्योति सूर्य से भी तेज थी, क्योंकि वह पुत्र की ज्योति थी। वह परमेश्वर का पुत्र था। अब, लूका अपने सुसमाचार में पौलुस के परिवर्तन के बारे में तीन बार बताता हैः प्रेरितों के काम 9, प्रेरितों के काम 22, और प्रेरितों के काम 26 में। इसका मतलब है कि यह घटना इस लेखक के लिए बहुत महत्वपूर्ण है जब वह हमें आरम्भिक कलीसिया के इतिहास की जानकारी देता है।

मैं ने हाल ही एक मसीही पिता की कहानी सुनी। इस मसीही पिता के दो पुत्रियाँ थी। वह हमारे विश्वास के परिवार का हिस्सा नहीं है; आप उसे नहीं जानते हैं, परन्तु उसने मुझे अपनी 18 वर्षीय बेटी के बारे में बताया जो हाल ही में घर छोड़कर चली गई थी। पाप से भरकर और उस पाप में जीने के स्वप्नों को लेकर वह घर से चली गई। उसने अपने मसीही पिता के चेहरे की ओर देखा और कहा, "मैं तुम्हें दोबारा कभी नहीं देखना चाहती।" वह अपने पुरूष मित्र के साथ उस कार में बैठी जो पिछले कुछ महीनों से उसके पास थी, वही कार जो उसके पिता ने कुछ माह पूर्व उसके लिए खरीदी थी, और वे चले गए।

पिता को पता चला कि वे मियामी, फ्लोरिडा में गए थे, जहाँ उसका जीवन पाप और विद्रोह से भरा था। उसने मुझे बताया कि ऐसे समय आए जब वह फोन करती थी और फोन पर रोती थी। उसे पता था कि वह शराब पीती थी और संभवतः नशीली दवाओं का सेवन कर रही थी। इससे पहले कि वह कुछ बोल पाती, उसका फोन काट दिया जाता और फिर कई सप्ताहों तक वह उसकी आवाज को नहीं सुन पाता था। उसका हृदय उस बेटी के लिए कितना दुःखी था जिससे वह इतना अधिक प्रेम करता था। मुझे याद है वह मुझे बता रहा था, "बस एक बार वह घर आ जाती। मैं उससे प्रेम करता, और मैं धीरज रखने के लिए तैयार हूँ, और मैं प्रतीक्षा करूँगा, मैं प्रार्थना करूँगा।"

मुझे याद आया कि कई बार पिताओं को कितना धीरज रखना पड़ता है। अच्छे पिताओं में धीरज होता है, क्या आप जानते हैं? परन्तु, एक अच्छे पिता के धीरज की तुलना सर्वशक्तिमान के धीरज से नहीं की जा सकती है। क्या इस पापी, विद्रोही, और क्रोधित व्यक्ति के प्रति सर्वशक्तिमान के धीरज को देख रहे हैं जो अपने आप को पापियों में सबसे बड़ा कहता है? क्या आप इस व्यक्ति के प्रति परमेश्वर की करूणा को देखते हैं जब वह उसे बचाता है और उसे अपने परिवार में लेकर आता है?

अपने प्रति परमेश्वर के धीरज को देखें।
यीशु ने कहा, "वैद्य की आवश्यकता भले–चंगों को नहीं परन्तु बीमारों को है।" उसने कहा, "मनुष्य का पुत्र भले–चंगों के लिए नहीं परन्तु बीमारों के लिए आया है।" वह खोए हुओं को खोजने और बचाने आया है। इसलिए, मैं आप से पूछता हूँ, क्या आप अपने प्रति परमेश्वर के धीरज को देखते हैं? मेरा मतलब है, आपने अन्तिम बार कब उन सारे समयों के बारे में विचार किया था जब आप असफल हुए और पाप किया और उसकी ओर से फिर गए थे?

मैं मेरे स्वयं के जीवन के बारे में सोचता हूँ। पहले 19 वर्षों तक मैं ने पूरी तरह पाप और स्वार्थ में जीवन व्यतीत किया। ऐसे बहुत से दिन थे जब मेरे पिता मेरी ओर अपनी पीठ फेर सकते थे, और इसमें वह सही भी थे क्योंकि मैं ने उनके धीरज को परखा था। रोमियों 2:4 के वचनों को सुनें, *"क्या तू उस की कृपा, और सहनशीलता, और धीरजरूपी धन को तुच्छ जानता है? और क्या यह नहीं समझता, कि परमेश्वर की कृपा तुझे मन फिराव को सिखाती है?"* सुनें, आपके प्रति परमेश्वर का धीरज, जिसके कारण पाप करने के बाद भी आप आज तक जीवित हैं, वह इसलिए है कि वह आप को अपना धीरज दिखा सके और आप को मन फिराव की ओर ला सके। यह इसलिए नहीं है कि आप अपने पाप में बने रहें; यह इसलिए है कि आप अपने पाप से फिर जाएँ। यदि आप परमेश्वर को नहीं जानते हैं, तो क्या आप अपने पाप से फिरेंगे जब आप पौलुस के प्रति और उससे भी व्यक्तिगत रूप से अपने प्रति परमेश्वर के धीरज को देखते हैं?

"प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कुछ लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो, वरन् यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले।" (1 पतरस 3:9) क्या आप मन फिराकर उस पर भरोसा करेंगे जिसने आप से प्रेम किया है और स्वयं को आपके लिए दे दिया है? क्या आप उस पर भरोसा रखेंगे जो पौलुस से मिला और जो आपसे मिलेगा? किसने ऐसा सिद्ध जीवन व्यतीत किया जैसा आप कभी नहीं जी सके? कौन स्थानापन्न के रूप में क्रूस पर मरा, और जब वह शापित बना, तो वह पौलुस के लिए और आपके लिए शापित बना? क्या आप अपना भरोसा उस पर रखेंगे जिसने पाप और मृत्यु और नरक को जीत लिया है? क्या आप उसके धीरज को देख रहे हैं?

परमेश्वर की सामर्थ

इस परिच्छेद में आप न केवल परमेश्वर के धीरज को, परन्तु क्या उसकी सामर्थ को भी देख रहे हैं? मेरे साथ प्रेरितों के काम 9:4 में देखें, *"और वह भूमि पर गिर पड़ा..."* यह घमण्डी, पापी व्यक्ति परमेश्वर के सामने नम्र होता है, अपने घुटनों पर, शायद अपने मुँह के बल दण्डवत् करता है, और मान लेता है कि यीशु के बारे में अपने विश्वास के बारे में वह पूरी तरह से गलत था। वह नम्र होता है। पद 4 और 5 को देखें, *"और यह शब्द सुना, कि हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है? उस ने पूछा; हे प्रभु, तू कौन है? उस ने कहा; मैं यीशु हूँ; जिसे तू सताता है।"* ब्रह्माण्ड का व्यक्तिगत परमेश्वर पौलुस से बात करने लगता है।

जब आप पाप करते हैं, तो पाप अन्तिम रूप से केवल लोगों के विरूद्ध नहीं होता है। जब आप पाप करते हैं, तो आपका पाप परमेश्वर के विरूद्ध होता है। पौलुस का कलीसिया को सताने का पाप परमेश्वर के विरूद्ध था। यह स्वयं यीशु मसीह के विरूद्ध था क्योंकि मसीह अपने लोगों के साथ एक है, कि यदि आप उनसे टकराते हैं तो आप यीशु से टकराते हैं। एक पवित्र और न्यायी और धर्मी परमेश्वर के हाथों में पड़ना

एक गम्भीर और खतरनाक बात है जो पाप से घृणा करता है, और पौलुस उस क्रोधी और न्यायी परमेश्वर के हाथों में पड़ने के योग्य था। परन्तु, परमेश्वर ने उसे वह दिया जिसके वह योग्य नहीं था; परमेश्वर ने उसे अनुग्रह दिया, और परमेश्वर की सामर्थ ने उसे रूपान्तरित कर दिया।

परमेश्वर की सर्वोपरि करूणा की सामर्थ को देखें।

क्या आप परमेश्वर की सर्वोपरि करूणा की सामर्थ को देख रहे हैं? क्या उसे आप इस पद में देख रहे हैं? परमेश्वर की सर्वोपरि करूणा। बाद के जीवन में पौलुस के वचनों को सुनें जिन्हें उसने गलातियों 1:15 में लिखा है। यदि चाहें तो आप इसे लिख सकते हैं। गलातियों 1:15–16, पौलुस ने कहा, "परन्तु परमेश्वर की, जिसने मेरी माता के गर्भ ही से मुझे ठहराया और अपने अनुग्रह से बुला लिया, जब इच्छा हुई कि मुझ में अपने पुत्र को प्रकट करे।" क्या आपने पद 16 के उस वाक्यांश को समझ लिया है? पौलुस मसीह को नहीं खोज रहा था; मसीह उसे खोज रहा था। पौलुस सर्वशक्तिमान से प्रार्थना नहीं कर रहा था। वह पवित्र आत्मा के विरोध में था, परन्तु परमेश्वर ने उससे बात की।

पौलुस मसीहियों को मारने के लिए खोज रहा था। परमेश्वर पौलुस को उससे प्रेम करने और अपने पुत्र को उसमें प्रकट करने के लिए खोज रहा था। पद 6–9 को देखें, इस प्रकाशन पर पौलुस का जवाब और यीशु ने उसे क्या करने के लिए कहा, *"परन्तु अब उठकर नगर में जा, और जो कुछ करना है, वह तुझ से कहा जाएगा। जो मनुष्य उसके साथ थे, वे चुपचाप रह गए; क्योंकि शब्द तो सुनते थे, परन्तु किसी को देखते न थे। तब शाऊल भूमि पर से उठा, परन्तु जब आँखे खोली तो उसे कुछ दिखाई न दिया और वे उसका हाथ पकड़कर दमिश्क में ले गए। और वह तीन दिन तक न देख सका, और न खाया और न पीया।"*

पौलुस आत्मिक रूप से अन्धा था और परमेश्वर उस पर प्रकट करता है कि यद्यपि वह आत्मिक रूप से अन्धा है परन्तु परमेश्वर उसे देखने के लिए आँखें दे रहा है। यह देखने के लिए आँखें कि जिस पुराने नियम को उसने याद कर रखा था और जिसे वह उत्पत्ति से मलाकी तक जानता था, वह उसी के बारे में था। वहाँ सब कुछ मसीह की ओर, दुःख उठाने वाले सेवक की ओर संकेत करता है, और पौलुस उससे चूक गया क्योंकि वह आत्मिक रूप से अन्धा था।

परिवर्तन में परमेश्वर की सामर्थ को देखें।

अतः, वे लोग पौलुस को दमिश्क में लेकर आते हैं जो मार्ग में उसके साथ थे। क्या आप पौलुस के जीवन के परिवर्तन में परमेश्वर की सामर्थ को देख रहे हैं? क्या आप इसे देख रहे हैं? 1 पतरस 1:3 के वचनों को सुनें, *"हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जिसने यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा, अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिए नया जन्म दिया।"*

प्रेरितों के काम 9:10 को देखें। *"दमिश्क में हनन्याह नाम एक चेला था, उस से प्रभु ने दर्शन में कहा, हे हनन्याह! उस ने कहा; हाँ प्रभु।"* ठीक है, यह व्यक्ति सेवा के लिए तैयार है। पद 11, *"तब प्रभु ने उस से कहा, उठकर उस गली में जा जो सीधी कहलाती है, और यहूदा के घर में शाऊल नाम एक तारसी को पूछ ले; क्योंकि देख, वह प्रार्थना कर रहा है। और उस ने हनन्याह नाम एक पुरूष को भीतर आते, और अपने ऊपर हाथ रखते देखा है; ताकि फिर से दृष्टि पाए।"*

"आपने उसका नाम क्या बताया, प्रभु?" पद 13, *"हनन्याह ने उत्तर दिया, कि हे प्रभु, मैं ने इस मनुष्य के विषय में बहुतों से सुना है, कि इस ने यरूशलेम में तेरे पवित्र लोगों के साथ बड़ी बड़ी बुराईयाँ की हैं। और यहाँ भी इस को महायाजकों की ओर से अधिकार मिला है, कि जो लोग तेरा नाम लेते हैं, उन सब को बाँध ले।"* यह रूचिकर है। हनन्याह कहता है, "प्रभु, स्वामी, ब्रह्माण्ड के सर्वोच्च परमेश्वर, मैं जानता हूँ कि आप जानते हैं शाऊल किस के लिए काम करता है। वह एक बुरा आदमी है, प्रभु।" वह इतना भयभीत है कि प्रभु की आज्ञा मानने में हिचकता है। संभवतः वह इसके बारे में थोड़ा–बहुत सोचता है।

पद 15 को देखें, *"परन्तु प्रभु ने उस से कहा, कि तू चला जा; क्योंकि यह, तो अन्यजातियों और राजाओं, और इस्राएलियों के सामने मेरा नाम प्रकट करने के लिये मेरा चुना हुआ पात्र है।"* ध्यान दें कैसे परिवर्तन के समय से ही परमेश्वर के पास पौलुस के लिए एक योजना है। वास्तव में, परमेश्वर उसे अपने मिशन को पूरा करने के लिए अधिकार देगा, पद 16, *"और मैं उसे बताऊँगा, कि मेरे नाम के लिए उसे कैसा कैसा दुख उठाना पड़ेगा।"* हम सब जानते हैं कि पौलुस ने कितना दुख उठाया। उसे हम यहाँ प्रेरितों के काम 9 में देखते हैं। उसे हम 2 कुरिन्थियों 11 जैसे परिच्छेदों में देखते हैं।

मैं 2 कुरिन्थियों 11:23–28 में से आपके लिए पढ़ना चाहूँगा। पौलुस कहता है कि परिश्रम, बन्दीगृह, अनगिनत बेंतों की मार, और मृत्यु के निकट पहुँचने की दशाओं को उसने अपने जीवन में सहा है। *"पाँच बार मैं ने यहूदियों के हाथ से उन्तालीस उन्तालीस कोड़े खाए। तीन बार मैं ने बेंतें खाईं; एक बार पत्थरवाह किया गया; तीन बार जहाज जिन पर मैं चढ़ा था, टूट गए; एक रात दिन मैं ने समुद्र में काटा। मैं बार बार यात्राओं में; नदियों के जोखिमों में; डाकुओं के जोखिमों में; अपने जाति वालों से जोखिमों में; अन्यजातियों से जोखिमों में; नगरों में के जोखिमों में; जंगल के जोखिमों में; समुद्र के जोखिमों में; झूठे भाइयों के बीच जोखिमों में पड़ा हूँ।"* कलीसिया के सन्दर्भ में भी, वह अपने आप को जोखिम में पाता है। पद 27, *"परिश्रम और कष्ट में; बार बार जागते रहने में; भूख–प्यास में; बार बार उपवास करने में; जाड़े में; उघाड़े रहने में। और और बातों को छोड़कर जिन का वर्णन मैं नहीं करता सब कलीसियाओं की चिन्ता प्रतिदिन मुझे दबाती है।"*

परन्तु, वह इसे आनन्द से करता था क्योंकि वह उसे जानता था जिसने पाप को जीत लिया था, और वह उसे जानता था जिसने पाप के दुष्परिणामों पर जय पा ली थी। चाहे आप मसीही हैं या नहीं, आप पाप के प्रभावों को अनुभव करेंगे। आप मसीह, जिसने पाप को जीत लिया है, पर भरोसा करते हुए और उसके आज्ञापालन में भी पाप के प्रभावों को अनुभव करते हैं।

क्या आप अपने प्रति उसके महान धीरज और प्रेम के कारण उसकी आज्ञा मानेंगे चाहे इसका मतलब कष्ट ही क्यों न हो? पौलुस ने कहा, हाँ। हनन्याह कहता है, "मैं जाऊँगा।" मेरे साथ प्रेरितों के काम 9 के पद 17 को देखें, "तब हनन्याह उठकर उस घर में गया, और उस पर अपना हाथ रखकर कहा, हे भाई शाऊल।" अब मेरे साथ सोचें। यह दमिश्क में हनन्याह नामक एक चेले के मुँह से निकलता है, जो शायद ऐसी विधवाओं को भी जानता होगा जो पौलुस द्वारा अत्याचार के परिणामस्वरूप विधवा हुई होंगी। दमिश्क और हनन्याह संभवतः यरूशलेम में ऐसे अनाथों को जानते होंगे, जो इस कारण अनाथ हुए क्योंकि पौलुस उनकी माता की मृत्यु में एक हिस्सेदार था, परन्तु वह कहता है, *"हे भाई शाऊल, प्रभु, अर्थात् यीशु, जो उस रास्ते में, जिस से तू आया तुझे दिखाई दिया था, उसी ने मुझे भेजा है, कि तू फिर दृष्टि पाए और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए।"*

पद 18, नई वाचा के युग में पौलुस द्वारा आत्मा के पूर्ण अनुभव को प्राप्त करने के बाद, *"और तुरन्त उस की आँखों से छिलके से गिरे, और वह देखने लगा और उठकर बपतिस्मा लिया।"* तुरन्त ही, वह कलीसिया से जुड़ गया, *"फिर भोजन करके बल पाया।"* विश्वास में आने के बाद कुछ दिनों तक वह दमिश्क में चेलों के साथ रहा, वह कलीसिया से प्रेम करता था और कलीसिया उससे प्रेम करती थी।

परमेश्वर की कलीसिया के द्वारा उसकी सामर्थ को देखें।

परमेश्वर की कलीसिया के द्वारा उसकी सामर्थ को देखें। क्या आप कलीसिया के द्वारा, हनन्याह के द्वारा, उस व्यक्ति के द्वारा परमेश्वर की सामर्थ को देख रहे हैं जिसे वह बपतिस्मा देता है? उसके द्वारा जिसने उसका स्वागत किया? उस व्यक्ति के द्वारा जिसने उसके लिए भोजन पकाया और उसे खिलाया?

उन लोगों ने उसके पाप के बावजूद उससे प्रेम किया जिसके प्रभावों को उन्होंने व्यक्तिगत रूप से अनुभव किया होगा। यह मुझे उसकी याद दिलाता है जो यीशु ने अपने चेलों से कहा था। क्या आपको याद है? यूहन्ना 13 में उसने कहा, *"मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ, कि एक दूसरे से प्रेम रखोः जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो।"*

"हे परमेश्वर, हमें क्षमा किया गया है; तो हम शाऊल को क्षमा कैसे न करते?" उन्होंने उससे प्रेम किया। अब, वहाँ बहुत से लोग उससे प्रेम करते थे। मैं ने उनके बारे में बताया था जिन्होंने उसके लिए भोजन बनाया था। संभवतः किसी ने उसके लिए भोजन बनाया होगा और परमेश्वर द्वारा दिए गए वरदानों का प्रयोग किया होगा, 1 कुरिन्थियों 12 के अनुसार, यह शायद ऐसा पहचानने योग्य वरदान नहीं होगा जैसा अन्यजातियों के प्रेरित, पौलुस जैसे कलीसिया की स्थापना करने वाले में होगा। शायद सहायता और करूणा और सेवा और मेजबानी जैसे वरदान, परन्तु उन्होंने उसकी सेवा और भी बढ़कर की।

इस सप्ताह जब मैं इस परिच्छेद को देख रहा था, मैं ने मार्टिन लूथर की रचनाओं में से एक *क्रिश्चयन वोकेशन* के बारे में सोचा, जो धर्मविज्ञान की एक बड़ी पुस्तक है जिसे उन्होंने कार्य के सिद्धान्त पर लिखा था। मार्टिन लूथर ने कलीसियाई इतिहास के ऐसे समय के दौरान लिखा होगा जब साधुओं और पुरोहितों के पदों को वास्तविक आत्मिक कार्य के रूप में देखा जाता था। यह माना जाता था कि दूसरे सारे लोग इन लोगों के बराबर आत्मिक नहीं थे। अतः, वह इसे लिखते हैं, और मुझे यह पसन्द है। इसे सुनें। वह कहते हैं, "जब हम प्रभु की प्रार्थना करते हैं तो हम परमेश्वर से कहत हैं, हमारी दिनभर की रोटी आज हमें दे। और वह हमें रोज की रोटी देता है। वह इसे किसान के द्वारा करता है, जिसने बीज बोया और फसल काटी; पकाने वाले के द्वारा जिसने आटे से रोटी पकाई; और वह व्यक्ति जिसने हमारा भोजन तैयार किया।"

फिर, एक इक्कीसवीं सदी का लेखक इसमें यह जोड़ता है,

> आज हम कुछ और लोगों को जोड़ सकते हैं जैसे ट्रक चालक जो अनाज को ढ़ोते हैं, अनाज के कारखाने में कार्य करने वाले कर्मचारी, गोदाम के कर्मचारी, खुदरा वितरक, माल का हिसाब रखने वाले लोग, काउन्टर पर बैठी महिला, या बैंक कर्मचारी, निवेशक, विज्ञापन देने वाले, वकील, कृषि वैज्ञानिक, यांत्रिक अभियन्ता, और देश की अर्थव्यवस्था का प्रत्येक खिलाड़ी। इन सबने आप को सुबह का नाश्ता करने के योग्य बनाया है।

"पौलुस, थोड़ा खाना खा लो। हम तुम से प्रेम करते हैं। हम तुम्हें क्षमा करते हैं। तुम कलीसिया का एक हिस्सा हो।" आप शायद अन्यजातियों के प्रेरित नहीं होंगे, परन्तु हो सकता है, जब आपके शहर में परमेश्वर पौलुस को उद्धार देता है तो आप अपना द्वार खोलेंगे और कहेंगे, "भोजन कर लो।"

देखें परमेश्वर की सामर्थ कैसे आपको आशा देती है।

देखें परमेश्वर की सामर्थ कैसे आपको आशा देती है। क्या आपने इसे देखा है? संतो, क्या आपने देखा है कि परमेश्वर की सामर्थ कैसे आपको आशा देती है? चाहे यह वह व्यक्ति हो जिसके लिए आप प्रार्थना कर रहे हैं और जो लैंगिक अनैतिकता के अधीन है, या चाहे आप स्वयं हैं जो लैंगिक अनैतिकता में दबे हैं, परमेश्वर बचाने में समर्थ है। उसने चौथी सदी में अगस्टीन नामक एक व्यक्ति को बचाया। उसने मसीह की महिमा के लिए उसकी आँखों को खोला, और उसने उस मनुष्य को उस बन्धन से आजाद करके कलीसियाई इतिहास के महानतम मसीही धर्मविज्ञानियों में से एक बना दिया।

शायद आप किस बालक के लिए प्रार्थना कर रहे होंगे जिसका पालन–पोषण मसीही परिवार में हुआ था, जिसे आपने जन्म से सुसमाचार सिखाया था, और अब वह एक नास्तिक है। क्या परमेश्वर एक नास्तिक को बचा सकता है? उसने उन्नीसवीं सदी में ऐसा किया जब उसने सी.एस. लुईस को बचाया, जो एक नास्तिक था, और विश्वास में आने पर उसने कहा कि वह आनन्द के मारे चकित था। शायद आप ऐसे व्यक्ति के लिए प्रार्थना कर रहे हैं जो अपने स्वयं के कार्यों के बल पर परमेश्वर को प्रसन्न करने का प्रयत्न कर रहा है। शायद वे अपने पाप को पहचानते हैं, परन्तु उनका मानना है कि यदि वे पर्याप्त मात्रा में भले कार्य करते हैं तो परमेश्वर के अनुग्रह को पा सकते हैं। परमेश्वर ने इस प्रकार के एक व्यक्ति को बचाया था। उसका नाम था मार्टिन लूथर। मार्टिन लूथर रोमियों की पुस्तक को पढ़ रहा था, और उसकी आँखें खुल गईं और वह प्रोटेस्टेन्ट धर्मसुधार आन्दोलन का अगुवा बना। शायद वह व्यक्ति एक शराबी या नशीली दवाओं का आदी होगा, लेकिन परमेश्वर उन्हें भी बचा सकता है। मैं जिम्मी हाले के बारे में सोचता हूँ जिसके बारे में मैंने वर्षों पूर्व जिम्मी हाले मिशन में एक पादरी के रूप में सीखा था, जो शहर के नामी शराबियों में से एक था। फिर भी, परमेश्वर ने उसे बचाया। आप चाहे किसी भी व्यक्ति के लिए भी प्रार्थना कर रहे हों, उसके लिए आशा है। मसीह में आपके लिए आशा है।

पौलुस का जोश

परमेश्वर का धीरज, परमेश्वर की सामर्थ, और अन्त में, हम पौलुस के जोश को देखते हैं। पौलुस एक उत्साही व्यक्ति था। आप देख सकते हैं कि अपने पाप में भी वह उत्साही था, परन्तु परमेश्वर ने उसके जोश को छुड़ाया, और उसने इस व्यक्ति को लिया जो उत्साही था, परन्तु गलत तरीके से, और उसने इस व्यक्ति के नजरिए, और उसके मन, और उसकी सोच, और उसके विचारों को पुनः विकसित किया और रूपान्तरित कर दिया ताकि वह यथार्थ को देख सके और उसे अपने पुत्र के लिए एक जोश दिया, और उसे सुसमाचार के प्रचार के लिए एक जोश दिया।

विश्वास में आने के समय से लेकर सुसमाचार प्रचार के लिए पौलुस के जोश को देखें।
विश्वास में आने के समय से लेकर सुसमाचार प्रचार के लिए पौलुस के जोश को देखें। पद 20 को देखें, वहाँ आप इसे देखते हैं, *"और वह तुरन्त,"* यानि उसी समय, *"आराधनालयों में यीशु का प्रचार करने लगा, कि वह परमेश्वर का पुत्र है।"* पौलुस उसके बारे में बात करने से अपने आप को रोक नहीं सका जिससे वह प्रेम करता था, और जिसने पहले उससे प्रेम किया था। *"और सब सुनने वाले चकित होकर कहने लगे; क्या यह वही व्यक्ति नहीं है जो यरूशलेम में उन्हें जो इस नाम को लेते थे नाश करता था, और यहाँ भी इसीलिए आया था, कि उन्हें बाँधकर महायाजकों के पास ले आए?"*

मैं इसे याद कर सकता हूँ जैसे कि यह कल ही का दिन था। इन गर्मियों में हम हमारे शहर की एक आवासीय परियोजना में गए, और हम दूसरे पासबानों और कलीसियाई अगुवों तथा कई अन्य संगठनों के लोगों के साथ मेज के चारों ओर बैठे थे। आवासीय परियोजना के निवासी और परियोजना के निदेशक इत्यादि भी थे। हम उस आवासीय परियोजना में यीशु के नाम में लोगों से प्रेम करने के तरीकों के बारे में सोच रहे थे और रणनीति बना रहे थे। हम योजना बना रहे थे, और हम सोच रहे थे, और हम प्रार्थना भी कर रहे थे।

मुझे याद है, निदेशक ने हमें रोका और कहा, "क्या तुम जानते हो? मैं यह करता आया हूँ," मुझे लगता है उसने शायद कहा होगा 15 वर्षों से। उसने कहा, "मैं जानता हूँ हम किस के विरोध में हैं। जब हम इस मेज के चारों ओर बैठकर सोच रहे हैं और रणनीति बना रहे हैं कि हम इस समुदाय में लोगों की सर्वोत्तम

सेवा कैसे कर सकते हैं, उसी समय, दलाल भी ऐसा ही कर रहे हैं। नशीली दवाओं के वितरक भी रणनीति बना रहे हैं कि वे इन लोगों को कैसे लूट सकते हैं।"

मैं यह सोचते हुए उस सभा से निकला, "बाहर ऐसे लोग हैं जिनके पास एमबीए है और परमेश्वर ने उन्हें जो दिया है उसका प्रयोग वे लोगों को मारने के लिए कर रहे हैं। वे आवासीय परियोजनाओं में मुख्यतः महिलाओं और बच्चों को मारने की खोज में हैं। ये विद्रोही, पापी, बीमार, अन्धकारमय, क्रूर, क्रोधित, हत्यारे, हठीले लोग जो हमेशा पवित्र आत्मा का विरोध करते हैं।"

मैं ने सोचा, "क्या यह अच्छा नहीं होगा यदि परमेश्वर उनमें से एक को बदल दे? यदि परमेश्वर उन हठीले, विद्रोही व्यक्तियों में से एक को बदलकर उसे कलीसिया की स्थापना करने वाला या उत्तरी अफ्रीका में सुसमाचार से वंचित लोगों के बीच एक मिशनरी बना दे तो कैसा रहेगा। या उत्तरी अफ्रीका में एक व्यवसायी, और वह उन सारी दक्षताओं का प्रयोग कर सकता है जिन्हें उसने विद्रोह में विकसित किया था, और परमेश्वर उन्हें मुक्त कर सकता है, और वह उनका प्रयोग वहाँ आर्थिक विकास के लिए कर सकता है, और उसके साथ, सुसमाचार सुना सकता है और चेले बना सकता है। या फिर परमेश्वर उसे बचाकर यहाँ एक पासबान बना सकता है।" क्योंकि परमेश्वर समर्थ है।

वैद्य लूका कहता है, "परमेश्वर ऐसे व्यक्ति को बचा सकता है।" क्या आप देख रहे हैं? पद 22 में लिखा है, *"शाऊल और भी सामर्थी होता गया, और वह यहूदियों का मुँह बन्द करता रहा।"* सुसमाचार प्रचार का उसका जोश और उत्साह और उसकी लगन बढ़ती गई। पद 24 से 30 में, हम इसे पढ़ चुके हैं, जहाँ भी वह गया, यहूदियों ने उसे मार डालने की योजना बनाई। चाहे दमिश्क हो या यरूशलेम, वे उसे मृत देखना चाहते थे। अतः, दमिश्क में परमेश्वर ने मसीह में भाइयों और बहनों को यह कहने के लिए खड़ा किया, "पौलुस, यह तुम्हारा समय नहीं है, यरूशलेम में चले जाओ।"

देखें यीशु मसीह के सबसे उत्साही अनुयायी भी अकेले जीवन व्यतीत नहीं कर सकते हैं।
अतः, पौलुस यरूशलेम में गया और साहस के साथ प्रचार करता रहा। परमेश्वर ने ऐसे यहूदियों को खड़ा किया जो उसे मार डालना चाहते थे, और वहाँ के चेलों ने कहा, "नहीं, पौलुस, यह तुम्हारे मरने का समय नहीं है।" बरनबास जैसे पुरूषों ने उसे परमेश्वर के लोगों से मिलाया, उस समय जब वे सब डरे हुए थे, और इसमें क्या आप देख सकते हैं कि यीशु मसीह के सबसे उत्साही अनुयायी भी अकेले जीवन व्यतीत नहीं कर सकते हैं? हाँ, ऐसे समय हैं जब मसीही लोग शहीद होते हैं। स्तिफनुस शहीद हुआ था।

परन्तु ऐसे समय भी हैं जब परमेश्वर कहता है, "नहीं, मैं चाहता हूँ तू उस स्थान को छोड़ दे जहाँ लोग तेरी हत्या करने का प्रयास कर रहे हैं क्योंकि पौलुस, तुझे अभी तेरह पत्रियाँ लिखनी हैं। रोम में ऐसे लोग हैं जिन्होंने कभी सुसमाचार नहीं सुना है, और मैं तुझे वहाँ भेजने वाला हूँ। मैं तुझे, तीन यात्राओं पर भेजूँगा। एक दिन तू अन्ताकिया की कलीसिया में पहुँचेगा, और अन्ताकिया की कलीसिया तुझे दूसरी जातियों के पास भेजेगी, परन्तु उससे भी पहले, पौलुस तू दमिश्क में अन्यजातियों और राजाओं और यहूदियों के सामने मेरे सुसमाचार का प्रचार करेगा। मैं तीन वर्ष के लिए तुझे अरब में भेजूँगा, और तू वहाँ प्रचार करेगा। फिर, तू यरूशलेम में जाएगा और वहाँ प्रचार करेगा। फिर वे तुझे कैसरिया में भेजेंगे और तू वहाँ प्रचार करेगा। फिर, तू अपने घर और अपने गृहनगर जाएगा और वहाँ सुसमाचार का प्रचार करेगा। फिर तू अन्ताकिया में जाएगा और वहाँ प्रचार करेगा। फिर, तू पूरे संसार में मेरे नाम का और मेरे सुसमाचार का प्रचार करेगा। पौलुस, तेरे द्वारा लिखी जाने वाली पत्रियों के द्वारा मैं संसार को हिला दूँगा, और मैं अपनी कलीसिया को बनाऊँगा।"

देखें कैसे परमेश्वर अपनी कलीसिया को बनाता और बढ़ाता है।

अतः, परमेश्वर के सिद्ध और बुद्धिमान प्रबन्ध में, कलीसिया ने पौलुस से कहा, "पौलुस, यह तुम्हारे मरने का समय नहीं है। यह तुम्हारे जीने का समय है।" क्या आप देख रहे हैं कि कैसे परमेश्वर अपनी कलीसिया को बनाता और बढ़ाता है? कलीसिया बढ़ती रही और वहाँ शान्ति थी। परमेश्वर सताव के समय देता है। वह शान्ति का समय देता है, परन्तु इनमें कोई अन्तर नहीं है। चाहे सताव हो या शान्ति, परमेश्वर अपनी कलीसिया को पवित्रता और गिनती में बढ़ाता है।

स्वयं के प्रति मसीह के प्रेम के प्रत्युत्तर में मसीह के लिए पौलुस के जोश को देखें।
स्वयं के प्रति मसीह के प्रेम के प्रत्युत्तर में मसीह के लिए पौलुस के जोश को देखें। हम इसलिए प्रेम करते हैं क्योंकि पहले उसने हमसे प्रेम किया। पौलुस यीशु मसीह के बारे में इसलिए उत्साह से नहीं भरा था क्योंकि वह एक उत्साही व्यक्ति था। वह मसीह के लिए इसलिए उत्साही था क्योंकि मसीह ने उससे व्यक्तिगत रूप से और अत्यधिक प्रेम किया था।

यीशु मसीह में आपके लिए परमेश्वर के जोश को देखें।
यीशु मसीह में आपके लिए परमेश्वर के जोश को देखें। *"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।"* (यूहन्ना 3:16)

"प्रेम इसमें नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया, पर इसमें है कि उसने हमसे प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा।" (1 यूहन्ना 4:10) यानि, यीशु ने परमेश्वर के क्रोध को शान्त किया जिससे हमें वह क्रोध न सहना पड़े। क्या आप उसके अनुग्रह और उसकी करूणा को देख रहे हैं? शायद, जब आपने परमेश्वर के वचन को पढ़ा तब उसने यीशु मसीह की ज्योति को आप पर चमकाया है, और आपने परमेश्वर की महिमा को देखा है, और आप उसे चाहते हैं। मसीह पर भरोसा रखें।

अतः, कलीसिया, क्या परमेश्वर आपके अपने शहर में एक ऐसे गैर–मसीही, धार्मिक शिक्षक और अगुवे को बचा सकता है, जो झूठी और गलत शिक्षा दे रहा है और लोगों को भटका रहा है? क्या वह इस प्रकार के व्यक्ति को बचा सकता है और उसे सुसमाचार से वंचित लोगों के बीच एक मिशनरी या कलीसिया की स्थापना करने वाला बना सकता है? आशा है कि आपने देख लिया है कि उस प्रश्न का उत्तर "हाँ" में है।

Permissions: You are permitted and encouraged to reproduce and distribute this material provided that you do not alter it in any way, use the material in its entirety, and do not charge a fee beyond the cost of reproduction. For web posting, a link to the media on our website is preferred. Any exceptions to the above must be approved by Radical.

Please include the following statement on any distributed copy: By Deric Thomas. © Deric Thomas & Radical. Website: Radical.net